उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मूल्यों का व्यक्तित्व, आत्मविश्वास एवं समायोजन के संदर्भ में अध्ययन

देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर
की शिक्षा संकाय में पी–एच.डी. उपाधि की पूर्ति हेतु
प्रस्तुत पूर्व प्रस्तुतीकरण सारांश

निर्देशिका

डॉ. शान्ति तेजवानी
प्राचार्या
श्री वैष्णव कॉलेज ऑफ टीचर्स ट्रेनिंग
इंदौर

शोधार्थी

बबीता दत्त

शिक्षा अध्ययन शाला
(प्रगत शिक्षा संस्थान)
नेक द्वारा ए+ ग्रेड प्राप्त संस्थान
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर
2023

1.0.0 प्रस्तावना

प्रस्तुत शोध शीर्षक ''उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मूल्यों का व्यक्तित्व, आत्मविश्वास एवं समायोजन के संदर्भ में अध्ययन'', उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में निहित मनोवैज्ञानिक गुणों में अंतर्संबंधता से संबंधित है। उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी किशोरावस्था के होते हैं तथा विद्यार्थियों के विकास की विभिन्न अवस्थाओं में यह अवस्था अत्यधिक महत्वपूर्ण मानी जाती है। किशोरावस्था को संघर्ष एवं तूफान की अवस्था कहा जाता है क्योंकि इस अवस्था में बाल्यावस्था में अर्जित स्थिरता पुनः अस्थिरता में बदलने लगती है, इस अवस्था में व्यक्ति का विकास सभी दिशाओं में अर्थात् शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक एवं सामाजिक विकास अन्य सभी अवस्थाओं की अपेक्षा अत्यधिक तीव्र गति से होता है। अतः यह अवस्था व्यक्तित्व के विकास की जटिल अवस्था होती है।

अतः इस अवस्था में विद्यार्थियों के मूल्य शिक्षा एवं व्यक्तित्व विकास, पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए जिससे वे समायोजित जीवन जी सकें। बालक जो भी लक्ष्य निर्धारित करता है उस पर उसके व्यक्तिगत मूल्यों, रूचियों, परिवार के सदस्यों का प्रभाव पड़ता है। मूल्यों का व्यक्ति के व्यवहार, व्यक्तित्व तथा कार्यों पर भी स्पष्ट प्रभाव पड़ता है इसलिए मूल्य सामाजिक जीवन को संभव एवं श्रेष्ठ बनाने हेतु आवश्यक है। वर्तमान समय में विद्यार्थियों के रहन सहन, भौतिक सुख सुविधाओं में परिवर्तन होते दिखाई देते हैं, जिसके कारण उनके मूल्यों, व्यक्तित्व, आत्मविश्वास एवं समायोजन में भी भिन्नता होती है अतः यह प्रश्न उठता है कि क्या विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, समायोजन एवं आत्मविश्वास का मूल्यों से संबंध होता है। श्रेष्ठ समाज एवं विकसित देश के निर्माण में नागरिकों के मूल्यों का श्रेष्ठ होना भी अति आवश्यक है जिसके लिए संतुलित समायोजित एवं आत्मविश्वासी होना भी आवश्यक है।

वर्तमान में विद्यालयों के विद्यार्थियों के मूल्यों, व्यक्तित्व, आत्मविश्वास एवं समायोजन में विकास हेतु प्रयास किए जाते हैं जिसके लिए पाठ्यचर्या में भी समय समय पर परिवर्तन किए जाते हैं। अतः यह प्रश्न उठता है कि क्या शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के मूल्यों का संबंध व्यक्तित्व, आत्मविश्वास एवं समायोजन में एक जैसा है या भिन्न भिन्न है। उक्त प्रश्नों का उत्तर खोजने हेतु शोध अध्ययन आवश्यक है। यह भी देखना आवश्यक

है कि मूल्य के विभिन्न आयामों यथा सैद्धांतिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, सौंदर्यात्मक तथा धार्मिक मूल्यों का व्यक्तित्व, आत्मविश्वास एवं समायोजन से किस प्रकार संबंधित है ?

इन प्रश्नों के उत्तरों को जानने हेतु शोधार्थी द्वारा व्यक्तित्व, आत्मविश्वास, समायोजन एवं मूल्यों के संदर्भ में शोध अध्ययन हेतु सैद्धांतिक पृष्ठभूमि एवं पूर्व शोधों का अध्ययन किया गया एवं शोध अध्ययन हेतु योजना बनाई गई।

1.1.0 मूल्य

मूल्य मानव अस्तित्व में किसी महत्वपूर्ण गुण का प्रतिनिधित्व करते हैं। मनुष्य जीवन पर्यन्त कुछ न कुछ सीखता रहता है और सीखने से अनुभव बढ़ते हैं। सीखते–सीखते जब वह परिपक्व हो जाता है तो उसे ऐसे अनुभव हो जाते हैं जो अनुभव उनके व्यवहार का मार्गदर्शन करते हैं, उन्हें निर्देशन देते हैं कि उन्हें क्या करना चाहिए, उसके लिए आदर्श क्या हैं? इन्हीं आदर्शों को मूल्य कहते हैं। इस प्रकार मूल्य किसी स्थिति का वह गुण है जो समालोचना या वरीयता प्रकट करते हैं। यह एक आदर्श है, जिसे पूर्ण करने हेतु व्यक्ति आजीवन प्रयास करते हैं।

'मूल्य' शब्द अंग्रेजी भाषा के वेल्यू (Value) का समानार्थी है, जिसका उद्‌भव लेटिन भाषा के वैलियर (Valere) नामक शब्द से हुई हैं। यह शब्द वस्तु की उपयोगिता, विशेषता, योग्यता एवं गुण को व्यक्त करता है, तात्पर्य यह है, कि मूल्य का अर्थ किसी व्यक्ति, विचार एवं वस्तु के उस गुण से है जिससे इसकी गुणवत्ता एवं महत्ता समझी जा सके। 'शील', 'गुण' एवं आदर्श आदि मूल्य के समानार्थी शब्द हैं। वास्तविक अर्थ में मूल्य वह हैं जो इस जगत को अर्थ प्रदान करते हैं। वस्तुतः मूल्य प्रत्येक व्यक्ति, घटना, क्रिया एवं विचार को अर्थ एवं सार्थकता प्रदान करते हैं। ''मूल्य एक प्रकार का मानक है। मनुष्य किसी वस्तु क्रिया, विचार को अपनाने के पूर्व यह निर्णय करता है, कि वह इसे अपनाए या त्याग दे। जब ऐसे विचार व्यक्ति के मन में, निर्णयात्मक ढंग से आते हैं, तो वह मूल्य कहलाते हैं।'' (तिवारी, 2016 पृ.2)। मूल्य चरित्र निर्माण तथा व्यक्तित्व विकास की दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण होते हैं। मूल्य एक प्रकार के मानक होते हैं। किशोरावस्था में बालक किसी क्रिया विचार या किसी वस्तु को अपनाने के पूर्व यह निर्णय करते हैं कि वह उसे अपनाए या त्याग दें। जब ऐसे विचार उनके मन में निर्णय लेते समय आते हैं तो वे मूल्य कहलाते हैं। उच्चतर माध्यमिक

स्तर के विद्यार्थी इन्हीं मूल्यों को आधार बनाकर अपनी जीवन शैली का निर्माण करते हैं। मूल्यों के अंर्तगत मनुष्य की अवधारणाएँ, विचार, विश्वास, आस्था, निष्ठा आदि समाहित होती है जिसके आधार पर ही बालकों का नैतिक, सामाजिक, संवेगात्मक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक विकास होता है।

सामान्यतः किसी समाज में जिन आदर्शों को महत्व दिया जाता है, और जिनसे इस समाज के व्यक्तियों का व्यवहार निर्देशित एवं नियंत्रित होता है, उन्हें उस समाज के मूल्य कहते हैं। मनुष्य के प्रत्येक निर्णय एवं कार्य में मूल्य की अवधारणा निहित होती है। विभिन्न समाजशास्त्रियों एवं मनोवैज्ञानिकों ने मूल्यों को अलग अलग रूप में परिभाषित किया है। जो निम्नलिखित है –

फ्लिंक महोदय के अनुसार हम जिन मापदण्डों को पंसद करते हैं और महत्व देते हैं और जिनके आधार पर हम अपना व्यवहार निश्चित करते हैं वे ही हमारे लिए मूल्य होते हैं। उनके शब्दों में – ''मूल्य मानक रूपी मानदण्ड हैं जिनके आधार पर मनुष्य अपने सामने उपस्थित क्रिया विकल्पों में से चयन करने में प्रभावित होते हैं।'' (शर्मा, 2016, पृ.3) ऑलपोर्ट ने मूल्य को परिभाषित करते हुए कहा है कि ''मूल्य एक मानव विश्वास है, जिसके आधार पर मनुष्य वरीयता प्रदान करते हुए कार्य करता है।'' (तिवारी, 2016, पृ.10)

गुड के अनुसार – ''मूल्य वह चारित्रिक विशेषता है, जो मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, एवं सौंदर्यात्मक दृष्टि से महत्वपूर्ण मानी जाती है, जो परामर्श के रूप में संदर्भित करने में विश्वास की आंतरिक प्रणाली के निर्णय में व्यक्ति की सुरक्षा या सहायता कर सकता है।'' (रामशक्ल, मिश्र, 2004–05) आर.वी.पर्सी के अनुसार – ''मूल्य किसी व्यक्ति के लिए रूचि का एक ऐसा विषय है जिसकी उत्पत्ति विषय तथा रूचि के बीच विशिष्ट संबंधो से होती है।'' (तिवारी, 2016, पृ.10)

विभिन्न परिभाषाओं को ध्यान में रखकर यह कहा जा सकता है कि किसी समाज के वे विश्वास, आदर्श, सिद्धांत, नैतिक नियम और व्यवहार, एवं मानदण्ड जिन्हें समाज के व्यक्ति महत्व देते हैं और जिनसे इनका व्यवहार निर्देशित एवं नियंत्रित होता है, वे उस समाज एवं व्यक्तियों के मूल्य होते हैं। ये आचरण संहिता होते हैं, ये अच्छे गुण होते हैं जिसे व्यवहार में

प्रतिबिंबत व्यक्ति अपने उद्देश्यों को प्राप्त करते हैं, जीवन की पद्धति को बनाते हैं एवं अपने व्यक्तित्व का विकास करते हैं।

1.1.1 मूल्यों का वर्गीकरण

प्रायः लोग यह सोचते है, कि सभी मूल्य प्रकृति से नैतिक होते हैं तथा मूल्यों पर आधारित निर्णय का अर्थ नैतिकता के आधार पर निर्णय लेना मानते हैं। वास्तव में अनेक मूल्य ऐसे होते हैं, जो नैतिकता के क्षेत्र से बाहर होते हैं। उदाहरणार्थ – बौद्धिक, सौन्दर्यात्मक, राजनीतिक, वैयक्तिक, आर्थिक तथा सामाजिक मूल्य। नैतिक मूल्य सही व गलत आचरण के निर्देशक हैं। ये मूल्य मानवता के आधारभूत अनोखेपन, सम्मान व महत्व के स्तर पर मानव आचरण का नियमन करते हैं। ये मानवीयता के संरक्षक हैं तथा इसी कारण अन्य मूल्यों से अधिक महत्वपूर्ण होते हैं। जब अन्य क्षेत्रों के मूल्य आधारभूत मानव दशाओं का आदर नहीं कर पाते तो उनका नैतिक मांगो से विरोध होता है। सत्य, स्पष्टता, संगति व कठोरता जैसे बौद्धिक मूल्य प्रायः नैतिक दृष्टि से उदासीन होते हैं। मूल्यों को अनेक प्रकार से वर्गीकृत किया गया है –

वास्तव में मूल्य सामाजिक उत्पाद हैं तथा समाज की विभिन्न संस्थाएँ पीढ़ी दर पीढ़ी कुछ मूल्यों को स्थानांतरित करने व संरक्षित रखने हेतु प्रयास करती रही हैं। अतः हम वैयक्तिक व संस्थागत मूल्यों की बात सोच सकते हैं। विभिन्न संस्थाओं के विशिष्टीकृत मूल्यों में भी परस्पर व्यापन (ओवरलेपिंग) होता हैं। वे एक–दूसरे से पूर्णतः भिन्न नही होते हैं। वी. एन.के.रेड्डी ने अपनी पुस्तक 'मैन, एजूकेशन एण्ड वेल्यूज' में भैतिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक, सौंदर्यात्मक, सहायक, नैतिक मूल्यों का उल्लेख किया है।

- भौतिक मूल्य– ये मूल्य सहायक मूल्य होते हैं। सम्पूर्ण विश्व यथार्थता का विस्तार है। यह यथार्थता भौतिक है तथा पृथ्वी, वायु, जल, आकाश, व अग्नि इस यथार्थता के मुख्य अवयव हैं। प्रत्येक दर्शन में भौतिक चीजों को समस्त उद्भव व विकास का आधार माना गया है।
- आर्थिक मूल्य– मनुष्य को जीवन के लिए भोजन की जरूरत होती है। समस्त समाज तथा उसकी कार्यप्रणाली आर्थिक मूल्यों पर आधारित हैं। जनसंख्या में वृद्धि के साथ–साथ धीरे–धीरे आर्थिक मूल्य अधिक महत्वपूर्ण होते जा रहें तथा मनुष्य भौतिकवादी होता जा रहा है।

- मनोवैज्ञानिक मूल्य– ये उच्च मूल्य हैं, जो चिन्तन, भावना तथा इच्छा में व्यक्ति की सांकल्पिक तथा भौतिक प्रकृति पर आधारित होते हैं। इन्हें पुनः बौद्धिक मूल्य, नैतिक मूल्य तथा सौंदर्यात्मक मूल्य अर्थात सत्य, शिव तथा सुन्दर में वर्गीकृत किया जा सकता है। (तिवारी, 2016) शेवर तथा स्ट्रांग ने मूल्यों को तीन वर्गों में वर्गीकृत किया है–
- सौंदर्यात्मक मूल्य – ये वे मानदण्ड हैं जिनसे हम सुन्दरता का निर्णय करते हैं। सुन्दरता, कला, संगीत, प्रकृति, ड्रेस कक्षा में प्रदर्शन, व्यक्तिगत बनावट आदि क्षेत्रों से संबंधित हो सकती है।
- सहायक मूल्य – ये मानदण्ड किसी उद्देश्य–चर्चा, व्याख्यान, प्रतियोगिता, समूह निर्माण, को प्राप्त करने के सर्वाधिक प्रभावी तरीके की जाँच में काम मे लाये जाते हैं।
- नैतिक मूल्य – इनमें वैयक्तिक या परिस्थिति विषयक वरीयताएँ। जैसे– शान्ति, सहभागिता, वफादारी सहयोग, धार्मिकता, ईमानदारी तथा समाज के लिए आधारभूत मान्यताएँ जैसे– मानव जीवन की पवित्रता, उचित प्रक्रिया, समान सुरक्षा, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता निहित है।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली ने शिक्षा में सामाजिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों पर दस्तावेज में 83 मूल्यों का उल्लेख किया है। (तिवारी, 2016, पृ.20–21)

ऑलपोर्ट एवं वर्नन ने मूल्यों को स्प्रेंजर के वर्गीकरण के आधार पर 6 श्रेणियों में विभक्त किया है। मनोवैज्ञानिकों में स्प्रेंजर द्वारा किया गया वर्गीकरण अधिक मान्य है जो निम्नलिखित है –

आलपोर्ट, वर्नन एवं स्प्रेंजर द्वारा मूल्यों का वर्गीकरण

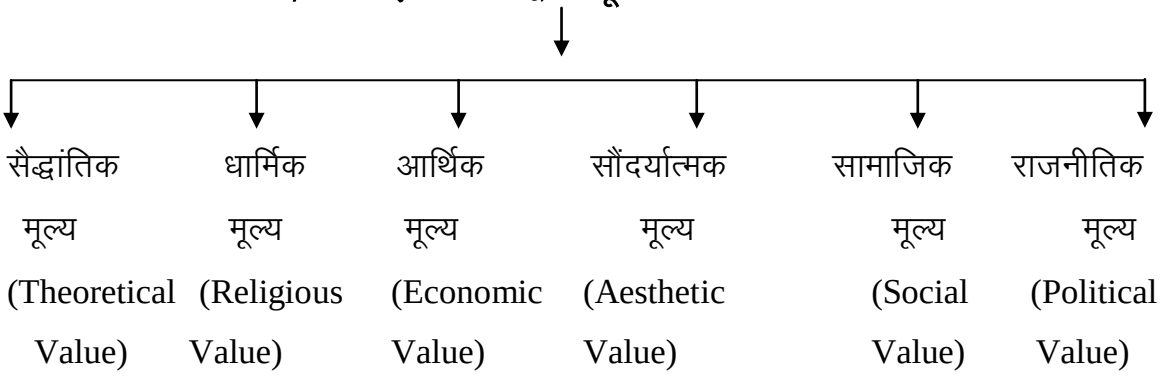

1. सैद्धांतिक मूल्य – सैद्धांतिक मूल्यों से तात्पर्य उन मूल्यों से है, जिनको व्यक्ति अपने जीवन के मूल सिद्धांतों के रूप में धारण करते है और उनके आधार पर अन्य मूल्यों का चयन करते हैं।

2. आर्थिक मूल्य – वे हैं, जो व्यक्ति को आर्थिक क्षेत्र में दिशा निर्देशन करते हैं।

3. सामाजिक मूल्य – सामाजिक मूल्यों से तात्पर्य उन मूल्यों से है, जो उसके सामाजिक व्यवहार को निर्देशित करते हैं।

4. राजनीतिक मूल्य – राजनीतिक मूल्यों से तात्पर्य उन मूल्यों से है जो उसके राजनीतिक व्यवहार को निर्देशित करते हैं।

5. सौंदर्यात्मक मूल्य – सौंदर्यात्मक मूल्यों से तात्पर्य उन मूल्यों से है जो सौंदर्यबोध के क्षेत्र एवं क्रियाओं के चयन में मदद करते हैं।

6. धार्मिक मूल्य – धार्मिक मूल्यों से तात्पर्य उन मूल्यों से है जो उसे धार्मिक नैतिक नियमों के रूप में प्राप्त होते हैं और जिनका पालन करना वह अपने धार्मिक विश्वासों के आधार पर करता है। (तिवारी, 2016, पृ.16)

1.2.0 व्यक्तित्व

व्यक्तित्व रूप में व्यक्ति अपने आप में जो कुछ भी है वही उसका व्यक्तित्व है। इसमें व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक सभी पक्ष सम्मिलित होते हैं। सामान्य शब्दों में व्यक्तित्व से तात्पर्य व्यक्ति के शारीरिक गठन, रंगरूप, वेशभूषा, बातचीत के ढंग, तथा कार्य व्यवहार जैसे विभिन्न गुण के संयोजन से लगाया जाता है। (गुप्ता एवं गुप्ता, 310)। व्यक्तित्व शब्द अंग्रेजी भाषा के पर्सनालिटी शब्द का हिन्दी रूपांतरण है, जिसका अर्थ है व्यक्ति के बाह्य गुण या बाह्य आचरण। पर्सनालिटी शब्द का उदय लेटिन भाषा के परसोना से हुआ है, जिसका अर्थ–मुखौटा है। परसोना शब्द का अभिप्रायः ऐसे पहनावे या वेशभूषा से होता है जिसे पहनकर अभिनयकर्ता अभिनय करता है। व्यक्तित्व का यह अर्थ अत्यंत ही संकुचित है। मनोवैज्ञानिकों ने इसे जटिल एवं व्यापक रूप में प्रस्तुत किया है। जी. डब्ल्यू. ऑलपोर्ट के अनुसार – व्यक्तित्व की 49 विभिन्न परिभाषाओं की

समीक्षा करने के बाद ऑलपोर्ट ने अपने विचार इस प्रकार व्यक्त किए – ''व्यक्तित्व व्यक्ति में उन मनोदैहिक व्यवस्थाओं का गतिशील संगठन है जो कि वातावरण के साथ उसके अपूर्व समायोजन निर्धारण करता है।'' (मंगल, 2008, पृ.460)

व्यक्तित्व का वर्गीकरण

युंग का वर्गीकरण – व्यक्तित्व का वर्गीकरण कार्ल युंग ने (1875.1961) अंतर्मुखी एवं बहिर्मुखी के रूप में किया इसे मनोवैज्ञानिक प्रकार भी कहते हैं क्योंकि यह व्यवहार की प्रवृत्तियों पर आधारित है। युंग ने इसकी व्याख्या इस प्रकार की है –

1. **अंतर्मुखी** – अंतर्मुखता की प्रवृत्ति व्यक्ति को आत्मकेंद्रित या अंतः की तरफ उन्मुख करती है। अंतर्मुखी व्यक्ति लज्जालु, संकोची, दब्बू, विचार प्रधान, निर्णय में विलंब करने वाले तथा संसार के प्रति आत्मनिष्ठ दृष्टिकोण रखने वाले होते हैं। ऐसे लोग प्रायः कल्पनाजगत में रहते हैं तथा अपनी आलोचना से शीघ्र ही घबड़ाते हैं। इनका ध्यान शारीरिक सुख तथा अपने ऊपर अधिक केंद्रित होता है। इन्हें एकाकीपन अधिक पसंद आता है। स्वभाव से शांत प्रकृति वाले एवं इनका व्यवहार बाह्य जगत की अपेक्षा आंतरिक कारकों से अधिक प्रभावित होते हैं।

2. **बहिर्मुखी** – अंतर्मुखी व्यक्तियों के विपरीत बहिर्मुखी व्यक्ति अपेक्षाकृत अधिक वाचाल, वाकपटु एवं सामाजिक होते हैं। ये व्यवहार में अधिक कुशल तथा इनका दृष्टिकोण वस्तुनिष्ठ होता है। ऐसे व्यक्ति वर्तमान में जीने वाले होते हैं। इनकी निर्णय लेने एवं उन्हें उपयोग में लाने की भी अधिक क्षमता होती है। बहिर्मुखी अधिक सक्रिय होते हैं तथा इनका व्यवहार बाह्य पर्यावरण से ज्यादा प्रभावित होता है। इनका व्यवहारिक एवं वास्तविक जगत से अधिक संबंध होता है एवं ये अपनी आलोचनाओं से भी घबराते नहीं है। इस वर्गीकरण का समर्थन आईजैंक ने भी किया है।

3. **उभयमुखी** – युंग के वर्गीकरण के साथ ही एक समस्या सामने आयी कुछ लोग न तो पूर्णतः अंतर्मुखी होते हैं ना ही बहिर्मुखी तो इन्हें किस वर्ग में रखा जाए? इस समस्या के निदान के रूप में एक और व्यक्तित्व प्रकार प्रस्तावित किया गया इसे उभयमुखी

व्यक्तित्व कहते हैं। इस प्रकार के लोगों में दोनों प्रकार की विशेषताएँ पाई जाती है। (मंगल, 2008)

1.3.0 समायोजन

समायोजन शब्द की उत्पत्ति लेटिन भाषा के ऐड–जस्ट (Ad-just) शब्द से हुई है इसका आशय है 'सही की तरफ' । अर्थात् किसी परिस्थिति में सामंजस्य बनाए रखने के लिए जो उचित हो वैसा व्यवहार करना समायोजन है। समायोजन वह प्रक्रम है जिसके अंतर्गत प्राणी अपनी आवश्यकताओं एवं संतुष्टि को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों के साथ सामंजस्य स्थापित करता है अर्थात् परिस्थिति के अनुसार व्यवहार करना ही समायोजन कहलाता है। स्वस्थ जीवन के लिए समायोजन अति आवश्यक है। यदि व्यक्ति परिस्थिति के साथ सामंजस्य स्थापित कर लेता है तो वह समायोजित कहलाता है और यदि व्यक्ति वातावरण के साथ सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाता है तो वह तनाव प्रतिबल, चिंता या कुण्ठा आदि से ग्रसित होकर कुसमायोजित हो जाता है। इससे उसका समाज में महत्व तो कम होता ही है साथ ही साथ निजी जीवन भी अस्त व्यस्त हो जाता है। समायोजन सामान्य एवं प्रचलित शब्द है। रैथ्स (1984) के अनुसार– ''समायोजन वह व्यवहार है जिसके द्वारा पर्यावरणीय माँगों के साथ सांमजस्य स्थापित किया जाता है।'' गेट्स, जेरसिल्ड एवं अन्य के अनुसार – ''समायोजन एक ऐसी सतत् प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक व्यक्ति अपने व्यवहार में इस प्रकार से परिवर्तन करता है कि उसे स्वयं तथा अपने वातावरण के बीच और अधिक मधुर संबंध स्थापित करने में मदद मिल सके।'' (मंगल, 2008, पृ.575) अर्थात् जैसी परिस्थितियाँ होती है उन्हीं के अनुसार व्यक्ति अपने व्यवहार, काम करने के तरीकों तथा लक्ष्यों में परिवर्तन कर लेता है। यदि वह अपने आप को वातावरण के बीच संतुलन स्थापित कर लेता है तो उसे समायोजित कहा जाता है। इसके विपरीत जब वह अपने एवं वातावरण के बीच सांमजस्य स्थापित नहीं कर पाता तब वह कुसमायोजित कहलाता है। वातावरण संबंधी स्थितियाँ एक जैसी नहीं रहती उसमें परिवर्तन होता रहता है इसलिए यह आवश्यक है कि व्यक्ति भी स्वयं में बदलाव करता रहे।

इस प्रकार हम समायोजन का अर्थ एवं प्रयोजन के बारे में निम्न निष्कर्ष निकाल सकते हैं –

- समायोजन एक प्रक्रिया एवं ऐसा साधन है जिसके द्वारा सुखी एवं संतोषजनक जीवन प्राप्त किया जा सकता है।
- समायोजन मनोवैज्ञानिक रूप से अच्छी तरह जीने के लिए उतना ही आवश्यक है जितना कि शरीर को जीने के लिए अपने खानपान एवं रहन सहन में परिवर्तन द्वारा अनुकूलन की प्रक्रिया।
- समायोजन से हमें अपनी योग्यता एवं क्षमता का भी ज्ञान होता है। जिसके आधार पर ही हम अपनी आवश्यकताओं को बढ़ाते हैं या कम करते हैं।
- समायोजन संबंधी विशेषताएँ हमें अपने आपको परिस्थितियों के आधार पर ढालने में मदद करती है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि कोई व्यक्ति अगर अपने जीवन से संतुष्ट है तो वह समायोजित है अगर संतुष्ट नहीं है, इसका मतलब वह कुसमायोजित है। (मंगल, 2008)

1.4.0 आत्मविश्वास

किसी व्यक्ति का व्यक्तित्व एकीकृत बहुआयामी संरचना है जिसमें 'स्व' की अवधारणा उस बहुआयामी संरचना का केंद्र बिंदू है। 'स्व' अर्थात् वह क्या है ? उसके पास क्या है ? वह क्या बन सकता है ? 'स्व' के अंतर्गत व्यक्ति के विचार, प्रयास, संवेदनाएँ, अनुभूति तथा उम्मीदों भय कल्पनाओं आदि का सम्मिश्रण है। व्यक्तित्व गुण या विशेषताओं जिन्हें विशेषक भी कहा जाता है से तात्पर्य हमारे व्यक्तित्व एवं व्यवहार के उन गुणों एवं विशेषताओं से है जिसके आधार पर हमारे व्यक्तित्व की पहचान होती है। किसी व्यक्ति का व्यक्तित्व संरचना, प्रतिक्रिया, प्रवृत्तियों के कई स्वरूप को एकीकृत करती है। जो स्वयं के लक्षण की अवधारणा के रूप में निकटता से संबंधित होता है। स्वामी विवेकानंद के अनुसार – ''ब्रह्मांड की समस्त शक्तियाँ हमारे भीतर समाहित हैं ये हम ही हैं जो अपने नेत्रों को ढ़क कर अंधेरे का रोना रोते हैं। '' उनके अनुसार – ''एक विचार लो उस विचार को अपने जीवन में उतार लो उसी के बारे में सोचो उसी का स्वप्न देखो और उसी के लिए जियो अपने मस्तिष्क एवं शरीर की शिक्षकों में उसे भर लो अन्य सभी विचारों को छोड़ केवल इसी विचार का मनन करो। यही सफलता का मूल है।'' (विकिपीडिया, 2019, अनुच्छेद 10) यादव के अनुसार – ''आत्मविश्वास साहस और योग्यता का वह समन्वय है, जिसमें व्यक्ति अपनी क्षमता का

उचित एवं अधिकतम उपयोग कर किसी भी कार्य को सफल बनाने में अहम भूमिका निभाता है।'' (यादव, 2023, अनुच्छेद 7) लीब लाजारो के अनुसार ''जिसे स्वयं पर भरोसा है वह दूसरों का विश्वास हासिल करेगा।'' इस प्रकार आत्मविश्वास एक ऐसा व्यक्तित्व गुण है जो व्यक्तियों को अपने और अपनी स्थितियों के बारे में यथार्थवादी एवं सकारात्मक बनाए रखने में सहायता करता है। आत्मविश्वासी व्यक्ति अपनी ज्ञान एवं क्षमताओं पर भरोसा करते हैं। आत्मविश्वासी लोग जिनकी कुछ उम्मीद पूरी नहीं होती तब भी वे स्वयं को सकारात्मक रूप में स्वीकार करते हैं। जो लोग आत्मविश्वासी नहीं होते वे दूसरों के अनुमोदन पर अत्यधिक निर्भर होते हैं। स्वयं आरामदायक महसूस करने के लिए जोखिम लेने से बचते हैं क्योंकि वे विफलता से डरते हैं। वे आमतौर पर सफल होने पर उम्मीद नहीं रखते और स्वयं को नीचे रखने में माहिर होते हैं। इसके विपरीत आत्मविश्वासी लोग कभी भी जोखिम उठाने को तैयार रहते हैं क्योंकि वे अपनी क्षमताओं पर भरोसा करते हैं।

1.5.0 शोध का औचित्य

यह अवस्था मानव जीवन में एक अति महत्वपूर्ण अवस्था है। उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी किशोरावस्था के होते हैं। इस अवस्था में मनुष्य के शारीरिक, लैंगिक, संवेगात्मक और मनोवैज्ञानिक विकास तीव्र गति से होते हैं, जो विद्यार्थियों को विशेष रूप से व्यक्तिगत ध्यान की माँग भी करती है। किशोरावस्था में विद्यार्थियों के व्यवहार एवं अभिवृत्ति में भी भिन्नता होती है, परंतु समाज उनसे क्या चाहता है ? इसके लिए वे हमेशा भ्रमित रहते हैं, जिसके कारण हो सकता है कि उनमें संघर्ष की स्थिति बनी रहती है। आज का बालक भावी समाज का नागरिक है अतः यह अत्यंत आवश्यक है कि उन्हें तनाव, चिंता, कुण्ठा, उद्दण्डता जैसी अपराधिक प्रवृत्तियों से दूर रखा जाये। जिसके लिए विद्यार्थियों में एकाग्रता, तार्किकता, आत्मविश्वास, स्मृति, संवेदना, आकांक्षाओं जैसे गुणों का विकास होना चाहिए। उपरोक्त समस्त गुण उनके मूल्यों से किस प्रकार संबंधित है, का अध्ययन करने हेतु शोधार्थी द्वारा मूल्यों के संदर्भ में उपलब्ध पूर्व शोधों का अध्ययन कर समीक्षा की गई।

शोधार्थी द्वारा मूल्यों से संबंधित पूर्व शोधों की समीक्षा करने पर पाया गया कि मूल्य एवं व्यक्तित्व के संदर्भ में रायपुरे (2007), सरमाह (2012), रोमानी (2018),एवं वंदना (2020) ने द्वारा शोध अध्ययन किये गये हैं। रायपुरे (2007) ने पाया कि बहिर्मुखी व्यक्तित्व का

सामाजिक मूल्य अंतर्मुखी व्यक्तित्व के सामाजिक मूल्य से सार्थक रूप से उच्च था। सरमाह (2012) ने पाया कि विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में बहिर्मुखी व साहसी एवं मूल्यों व स्वनियंत्रण में सार्थक सहसंबंध था। रोमानी (2018) ने पाया कि विभिन्न वर्गों के भारतीयों के व्यक्तित्व एवं नैतिक मूल्यों में सार्थक सहसंबंध था। वंदना (2020) ने निष्कर्ष में पाया कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व तथा नैतिक विकास में धनात्मक सहसंबंध था। निशा (1990) ने शोध अध्ययन में पाया कि किशोरों के सामाजिक अलगाव का उसके बहिर्मुखिता व्यक्तित्व से ऋणात्मक सहसंबंध था।

मूल्यों एवं समायोजन से संबंधित शोध अध्ययन के अंतर्गत रजिता एवं लिनस (2007), दीक्षित (2016) ने पाया कि जिन महिलाओं के सामाजिक मूल्य उच्च थे उनका घर एवं सामाजिक क्षेत्रों में उच्च समायोजन था। इसके अतिरिक्त मूल्य से संबंधित पूर्व शोधों के अंतर्गत शैलजा (2002), द्विवेदी (2005), चार्ल्स एवं पारिख (2017), एवं लवलीन (2018) ने मूल्यों से संबंधित शोध अध्ययन लिंग के संदर्भ में किये गए। शैलजा एवं विजयलक्ष्मी (2002) ने पाया कि पुरूषों में सत्य की खोज से संबंधित सैद्धांतिक मूल्य अधिक प्रभावी थे। द्विवेदी (2005) ने पाया गया कि ग्रामीण एवं शहरी प्राथमिक विद्यालय के पुरूष एवं महिला शिक्षकों के मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं था। रजिता एवं लिनस (2007) ने पाया कि विद्यार्थियों के विभिन्न मूल्य स्तरों जैसे सामाजिक मूल्य, धार्मिक मूल्य एवं आर्थिक मूल्यों का उनकी कक्षा, लिंग तथा विद्यालय के क्षेत्र से उदारवादी संबंध था। त्रिपाठी (2015) ने निष्कर्ष में पाया कि पुरुष लिपिक कर्मचारियों एवं कार्यपालक अधिकारियों के मूल्यों में सार्थक अंतर था। चार्ल्स एवं पारीख (2017) ने पाया कि छात्राओं के द्वारा आर्थिक मूल्यों का चयन किया उनमें आर्थिक मूल्य छात्रों की तुलना में बेहतर पाए गए जबकि छात्रों के द्वारा पावर मूल्य एवं स्वास्थ्य मूल्यों का चयन किया गया। लवलीन (2018) ने निष्कर्ष में पाया कि पुरुष एवं महिला विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों, व्यक्तिगत आयामों एवं आत्म सम्मान में सार्थक अंतर था। वीनम (2017) ने पाया कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों के शिक्षकों के मूल्यों के विभिन्न आयामों जैसे सौंदर्यात्मक मूल्यों में सार्थक अंतर पाया गया जबकि सैंद्धांतिक मूल्यों, आर्थिक मूल्यों, सामाजिक मूल्यों, राजनीतिक मूल्यों एवं धार्मिक मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं पाए गए।

उपरोक्त शोध अध्ययनों की समीक्षा के अतिरिक्त मूल्यों एवं विद्यालय के प्रकार से संबंधित पूर्व शोध अध्ययन के अंतर्गत शाम्भी (1988) ने पाया कि तीनों संस्थाओं श्री सत्यसांई

हायर सेकण्डरी विद्यालय, मिशनरी विद्यालय तथा केन्द्रीय विद्यालय के विद्यार्थियों के मूल्य पैटर्न में सार्थक अंतर था। श्री सत्यसाई के उच्च एवं केन्द्रीय विद्यालय के मूल्य पैटर्न निम्न थे। नारद (2007) ने पाया कि सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के धार्मिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, सौंदर्यात्मक मूल्य में सार्थक अंतर नहीं था जबकि आर्थिक मूल्यों में सार्थक अंतर था। गिल (2018) ने निष्कर्ष में पाया कि शासकीय एवं अशासकीय शैक्षिक महाविद्यालयों में कार्यरत पुरुष व्याख्याताओं के मूल्यों में सार्थक अंतर नही था। रोजर्स (2019) ने पाया कि मिशनरी एवं नॉन मिशनरी विद्यालय के विद्यार्थियों के मूल्यों में सार्थक अंतर था। सेठ (2001) ने निष्कर्ष में पाया कि 1. कक्षा 7वीं की छात्राओं के सौंदर्यात्मक, आर्थिक तथा धार्मिक मूल्य छात्रों की अपेक्षा उच्च थे जबकि कक्षा 8वीं के छात्राओं की धार्मिक मूल्य छात्रों की अपेक्षा उच्च पाये गये। 2. छात्राओं के ज्ञान, सौंदर्यात्मक तथा स्वास्थ्य मूल्य उच्च पाये गये जबकि कक्षा 8वीं के छात्राओं के आर्थिक एवं सामाजिक मूल्य उच्च पाये गये। 3. छात्रों के विभिन्न मूल्यों के बीच कोई सार्थक अंतर नही पाये गये। श्रीवास्तव (2002) ने शोध के निष्कर्ष में पाया कि हिन्दी माध्यम के विद्यालय के महिला एवं पुरूष शिक्षकों के मूल्य तरीकों के मध्य कोई लिंग विभेद में सार्थक अंतर नही पाया गया । परंतु अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय के शिक्षकों के ज्ञान, आर्थिक एवं स्वास्थ्य मूल्यों में सार्थक अंतर पाया गया। शर्मा (2009) ने शोध के निष्कर्ष में पाया कि सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों की पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग न लेने वाले छात्रों की अपेक्षा भाग लेने वाले छात्रों के व्यक्तित्व मूल्यों की सक्रियता मात्रा अधिक है। सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों की पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग न लेने वाली छात्राओं की अपेक्षा भाग लेने वाली छात्राएं अधिक सक्रिय, उत्साही, प्रभुत्ववादी, विषाद रहित, संवेगात्मक रूप से स्थिर, उच्च व्यक्तित्व स्तर वाली पाई गई। पाण्डे (2010) ने निष्कर्ष में पाया गया कि 1. परिवार द्वारा स्वीकृति एवं अस्वीकृति प्रदान किये जाने वाले छात्रों के सैद्धांतिक मूल्य, आर्थिक मूल्य तथा राजनैतिक मूल्य में अस्वीकृति प्राप्त छात्रों में स्वीकृति प्राप्त छात्रों की अपेक्षा सैद्धांतिक, आर्थिक, राजनैतिक मूल्यों की मात्रा अधिक पायी गयी। सौंदर्यात्मक मूल्य और धार्मिक मूल्य में स्वीकृति प्राप्त छात्रों में अस्वीकृति प्राप्त छात्रों की अपेक्षा सौंदर्यात्मक एवं धार्मिक मूल्य की मात्रा अधिक पायी गयी इसका कारण यह है कि परिवार द्वारा स्वीकृति प्रदान किये जाने वाले पारिवारिक संबंधों के छात्रों मे धार्मिक एवं सौंदर्यात्मक पक्षों पर अधिक

ध्यान दिया जाता है। 2. परिवार द्वारा धारण किये जाने वाले एवं स्वीकृति प्राप्त छात्राओं के सैद्धांतिक मूल्य, आर्थिक मूल्य, सामाजिक मूल्य में ध्यान दिये जाने वाली छात्राओं में स्वीकृति प्राप्त छात्राओं की अपेक्षा सैद्धांतिक, आर्थिक एवं सामाजिक मूल्यों की मात्रा अधिक पाई गई। सौंदर्यात्मक मूल्य, राजनैतिक मूल्य एवं धार्मिक मूल्य में स्वीकृति प्राप्त छात्राओं में ध्यान दिये जाने वाली छात्राओं की अपेक्षा सौंदर्यात्मक, राजनैतिक एवं धार्मिक मूल्यों की मात्रा अधिक पायी गयी। अहमद एवं घोष (2012) ने अपने शोध निष्कर्ष में यह पाया कि महाविद्यालय के विद्यार्थियों में नैतिक मूल्य, सामाजिक परिपक्वता और जीवन संतुष्टि के मध्य संबंधों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। राय (2012) ने परिणाम में पाया कि प्रकृतिवादी बुद्धि एवं समायोजन में सार्थक सहसंबंध पाया गया जबकि सामाजिक मूल्यों के साथ सार्थक सहसंबंध पाया गया। देशभक्ति मूल्यों, सामाजिक मूल्यों, आध्यात्मिक मूल्यों एवं ज्ञान मूल्यों में सार्थक संबंध नही पाया गया। राय (2014) ने अध्ययन के निष्कर्ष में पाया कि 1. सरकारी विद्यालयों के सुसमायोजित एवं कुसमायोजित छात्रों एवं छात्राओं के व्यक्तिगत मूल्यों में सार्थक अंतर पाया गया। 2. सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के सुसमायोजित एवं कुसमायोजित छात्रों एवं छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अंतर पाया गया। 3. सरकारी विद्यालयों के सुसमायोजित एवं कुसमायोजित विद्यार्थियों के धार्मिक मूल्य, आर्थिक मूल्य, ज्ञानात्मक मूल्य, सुखात्मक मूल्य तथा स्वास्थ्य मूल्य के माध्य औसत स्तर का धनात्मक सहसंबंध पाया गया जबकि सामाजिक मूल्य, प्रजातांत्रिक मूल्य, सौंदर्यात्मक मूल्य, शक्ति मूल्य तथा पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्य में निम्न स्तर का धनात्मक सहसंबंध पाया गया। इंदौरिया (2015) ने अपने अध्ययन में पाया कि झंझूनु जिले के कस्तुरबा गाँधी उच्च प्राथमिक विद्यालय की बालिकाओं के आत्मविश्वास, समायोजन एवं मानवीय मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं है। इसी प्रकार सीकर जिले के कस्तुरबा गाँधी उच्च प्राथमिक विद्यालय की बालिकाओं के आत्मविश्वास, समायोजन एवं मानवीय मूल्यों में कोई संबंध नहीं है।

मूल्य से संबंधित पूर्व शोध अध्ययनों की समीक्षा करने से यह पाया गया कि मूल्य के विभिन्न आयामों का पृथक पृथक शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के संदर्भ में एवं छात्र एवं छात्राओं के संदर्भ में अध्ययन किया गया जबकि मूल्य एवं व्यक्तित्व, मूल्य एवं समायोजन तथा मूल्य एवं आत्मविश्वास के संदर्भ में बहुत ही कम शोध अध्ययन प्राप्त हुए है जबकि पूर्व शोध अध्ययनों में मूल्य का व्यक्तित्व, समायोजन एवं आत्मविश्वास के साथ

संयुक्त संबंध नहीं किया गया है। शोधार्थी यह जानना चाहती है कि वर्तमान में उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के विभिन्न प्रकार के मूल्यों का उनके व्यक्तित्व, समायोजन एवं आत्मविश्वास से किस प्रकार का संबंध है क्या मूल्यों की भविष्यवाणी व्यक्तित्व, समायोजन एवं आत्मविश्वास के संयुक्त योगदान द्वारा की जा सकती है या केवल उपरोक्त चरों के स्वतंत्र योगदान द्वारा की जा सकती है। क्या लिंग एवं विद्यालय के प्रकार के आधार पर भी विद्यार्थियों के मूल्यों की भविष्यवाणी कर सकते हैं ? उक्त शोध प्रश्नों के उत्तर जानने हेतु शोधार्थी द्वारा उच्चत्तर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मूल्यों का व्यक्तित्व, आत्मविश्वास एवं समायोजन के संदर्भ में अध्ययन, शीर्षक का चयन किया गया।

1.6.0 समस्या कथन

प्रस्तुत शोध का समस्या कथन निम्नांकित था –

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मूल्यों का व्यक्तित्व, आत्मविश्वास एवं समायोजन के संदर्भ में अध्ययन

1.6.1 संक्रियात्मक परिभाषाएँ

मूल्य

विद्यार्थियों के विभिन्न मूल्य के आयामों यथा सैद्धांतिक, आर्थिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक मूल्यों के रूप में मूल्यों को परिभाषित किया जा सकता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में मूल्यों को ओझा एवं भार्गव द्वारा निर्मित एवं प्रमापीकृत स्टडी ऑफ वेल्यू टेस्ट से विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त अंकों के रूप में परिभाषित किया गया है।

व्यक्तित्व

व्यक्तित्व को विद्यार्थियों के विभिन्न अंतर्मुखी एवं बर्हिमुखी गुणों के रूप में परिभाषित किया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में शर्मा एवं अग्रवाल द्वारा निर्मित एवं प्रमापीकृत व्यक्तित्व परीक्षण से प्राप्त अंकों के आधार पर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का मूल्यांकन किया गया है।

आत्मविश्वास

आत्मविश्वास स्वयं की अवधारणा के प्रति स्वयं का सकारात्मक दृष्टिकोण है, यह किसी व्यक्ति की कथित क्षमता को संदर्भित करता है। आत्मविश्वास एक व्यक्ति की बाधाओं को दूर करने और सब कुछ ठीक होने की स्थित में प्रभावी ढंग से कार्य करने की क्षमता को संदर्भित करता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में आत्मविश्वास को रेखा गुप्ता द्वारा निर्मित एवं प्रमापीकृत आत्मविश्वास अनुसूची से विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त अंकों के रूप में परिभाषित किया गया है।

समायोजन

समायोजन को विद्यार्थियों के विभिन्न क्षेत्रों यथा विद्यालय से संबंधित शैक्षिक, भावनात्मक तथा सामाजिक समायोजन में कार्य करने के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में समायोजन को सिन्हा एवं सिंह द्वारा निर्मित एवं प्रमापीकृत समायोजन अनुसूची से विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त अंकों के रूप में परिभाषित किया गया है।

1.7.0 उद्देश्य

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य निम्नांकित थे –

1. शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मूल्यों एवं व्यक्तित्व के मध्य सहसंबंध का अध्ययन पृथक–पृथक करना जबकि आत्मविश्वास एवं समायोजन के प्रभाव को नियंत्रित किया गया हो।
2. शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मूल्यों एवं आत्मविश्वास के मध्य सहसंबंध का अध्ययन पृथक–पृथक करना जबकि व्यक्तित्व एवं समायोजन के प्रभाव को नियंत्रित किया गया हो।
3. शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मूल्यों एवं समायोजन के मध्य सहसंबंध का अध्ययन पृथक–पृथक करना जबकि व्यक्तित्व एवं आत्मविश्वास के प्रभाव को नियंत्रित किया गया हो।
4. शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों के मूल्यों एवं व्यक्तित्व के मध्य सहसंबंध का अध्ययन पृथक–पृथक करना जबकि आत्मविश्वास एवं समायोजन के प्रभाव को नियंत्रित किया गया हो।
5. शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों के मूल्यों एवं आत्मविश्वास के मध्य सहसंबंध का अध्ययन पृथक–पृथक करना जबकि व्यक्तित्व एवं समायोजन के प्रभाव को नियंत्रित किया गया हो।
6. शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों के मूल्यों एवं समायोजन के मध्य सहसंबंध का अध्ययन पृथक–पृथक करना जबकि व्यक्तित्व एवं आत्मविश्वास के प्रभाव को नियंत्रित किया गया हो।

7. शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्राओं के मूल्यों एवं व्यक्तित्व के मध्य सहसंबंध का अध्ययन पृथक–पृथक करना जबकि आत्मविश्वास एवं समायोजन के प्रभाव को नियंत्रित किया गया हो।
8. शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्राओं के मूल्यों एवं आत्मविश्वास के मध्य सहसंबंध का अध्ययन पृथक–पृथक करना जबकि व्यक्तित्व एवं समायोजन के प्रभाव को नियंत्रित किया गया हो।
9. शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्राओं के मूल्यों एवं समायोजन के मध्य सहसंबंध का अध्ययन पृथक–पृथक करना जबकि व्यक्तित्व एवं आत्मविश्वास के प्रभाव को नियंत्रित किया गया हो।
10. शासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मूल्य एवं उनके विभिन्न आयामों की भविष्यवाणी करने में व्यक्तित्व, आत्मविश्वास एवं समायोजन के संयुक्त योगदान का अध्ययन करना।
11. अशासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मूल्य एवं उनके विभिन्न आयामों की भविष्यवाणी करने में व्यक्तित्व, आत्मविश्वास एवं समायोजन के संयुक्त योगदान का अध्ययन करना।
12. शासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मूल्य एवं उनके विभिन्न आयामों की पृथक–पृथक भविष्यवाणी करने में व्यक्तित्व, आत्मविश्वास एवं समायोजन के स्वतंत्र योगदान का अध्ययन करना।
13. अशासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मूल्य एवं उनके विभिन्न आयामों की पृथक–पृथक भविष्यवाणी करने में व्यक्तित्व, आत्मविश्वास एवं समायोजन के स्वतंत्र योगदान का अध्ययन करना।

1.8.0 परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत शोध अध्ययन की निम्नांकित परिकल्पनाएँ थी–

1. शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मूल्यों एवं व्यक्तित्व के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है, जबकि आत्मविश्वास एवं समायोजन के प्रभाव को नियंत्रित किया गया हो।

2. शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मूल्यों एवं आत्मविश्वास के मध्य सार्थक सहसंबंध नहीं है जबकि व्यक्तित्व एवं समायोजन के प्रभाव को नियंत्रित किया गया हो।
3. शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मूल्यों एवं समायोजन के मध्य सार्थक सहसंबंध नहीं है जबकि व्यक्तित्व एवं आत्मविश्वास के प्रभाव को नियंत्रित किया गया हो।
4. शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों के मूल्यों एवं व्यक्तित्व के मध्य सहसंबंध नहीं है जबकि आत्मविश्वास एवं समायोजन के प्रभाव को नियंत्रित किया गया हो।
5. शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों के मूल्यों एवं आत्मविश्वास के मध्य सहसंबंध नहीं है जबकि व्यक्तित्व एवं समायोजन के प्रभाव को नियंत्रित किया गया हो।
6. शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों के मूल्यों एवं समायोजन के मध्य सहसंबंध नहीं है जबकि व्यक्तित्व एवं आत्मविश्वास के प्रभाव को नियंत्रित किया गया हो।
7. शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्राओं के मूल्यों एवं व्यक्तित्व के मध्य सहसंबंध नहीं है जबकि आत्मविश्वास एवं समायोजन के प्रभाव को नियंत्रित किया गया हो।
8. शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्राओं के मूल्यों एवं आत्मविश्वास के मध्य सहसंबंध नहीं है जबकि व्यक्तित्व एवं समायोजन के प्रभाव को नियंत्रित किया गया हो।
9. शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्राओं के मूल्यों एवं समायोजन के मध्य सहसंबंध नहीं है जबकि व्यक्तित्व एवं आत्मविश्वास के प्रभाव को नियंत्रित किया गया हो।
10. शासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मूल्य एवं उनके विभिन्न आयामों की भविष्यवाणी करने में व्यक्तित्व, आत्मविश्वास एवं समायोजन का सार्थक संयुक्त योगदान नहीं है।

11. अशासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मूल्य एवं उनके विभिन्न आयामों की भविष्यवाणी करने में व्यक्तित्व, आत्मविश्वास एवं समायोजन का सार्थक संयुक्त योगदान नहीं है।
12. शासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मूल्य एवं उनके विभिन्न आयामों की पृथक–पृथक भविष्यवाणी करने में व्यक्तित्व, आत्मविश्वास एवं समायोजन का सार्थक स्वतंत्र योगदान नहीं है।
13. अशासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मूल्य एवं उनके विभिन्न आयामों की पृथक–पृथक भविष्यवाणी करने में व्यक्तित्व, आत्मविश्वास एवं समायोजन का सार्थक स्वतंत्र योगदान नहीं है।

1.9.0 परिसीमन

प्रस्तुत शोध हेतु निम्नलिखित परिसीमन निर्धारित किए गए है –

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन इन्दौर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों तक ही सीमित है।
2. प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु माध्यमिक शिक्षा मंडल भोपाल से संबद्ध विद्यालयों का ही चयन किया गया।
3. प्रस्तुत शोध हेतु प्रदत्त संकलन उच्चतर माध्यमिक स्तर के कक्षा 11 वीं एवं 12 वीं के 20 विद्यालयों से किया गया।

1.10.0 न्यादर्श

प्रस्तुत शोध की जनसंख्या इंदौर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थी थे। सर्वप्रथम इंदौर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के माध्यमिक शिक्षा मंडल भोपाल से संबंधित शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की सूची तैयार की गई। शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की संख्या 36 थी एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों की संख्या 258 से अधिक थी। तत्पश्चात् शोधार्थी द्वारा लॉटरी तकनीक से 10 शासकीय (बाल विनय मंदिर, उच्चतर माध्यमिक विद्यालय विजयनगर, शासकीय कस्तुरबा विद्यालय, उच्चतर माध्यमिक विद्यालय भागीरथपुरा, उच्चतर माध्यमिक विद्यालय अहिल्याश्रम, उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बेटमा, उच्चतर माध्यमिक विद्यालय डकाच्या, उच्चतर माध्यमिक विद्यालय सांवेर, उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय सांवेर एवं उच्चतर

माध्यमिक विद्यालय मांगलिया) तथा 10 अशासकीय (कैरियर एकेडमी, ऑक्सफोर्ड विद्यालय, एम. जी. एम. खजराना, टैगोर विद्यालय कैलाशपुरी, भारत बाल विनय मंदिर, बेटमा पब्लिक स्कूल, ग्रामीण जीवन ज्योति नवआदर्श विद्यालय एवं प्रेसिडेंसी पब्लिक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय कैलोद काकड़, एल. के. प्रजापति विद्यालय) उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया। न्यादर्श में छात्र एवं छात्राएं दोनों सम्मिलित थे। न्यादर्श में सत्र 2018–19 के कुल 655 विद्यार्थी सम्मिलित थे। जो विभिन्न सामाजिक आर्थिक स्तर के थे। विद्यालयवार विद्यार्थियों की संख्या का विवरण तालिका क्रमांक 1.1 में किया गया है –

तालिका क्रमांक 1.1

विद्यालयवार एवं लिंगवार विद्यार्थियों की संख्या

क्र.	विद्यालय प्रकार	विद्यालय का नाम	छात्र	छात्राएँ	कुल
1.	शासकीय विद्यालय	शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, विजयनगर, इंदौर	15	13	28
		शासकीय कस्तुरबा कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, इंदौर	00	25	25
		शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, भागीरथपुरा, इंदौर	14	12	26
		शासकीय एक्सेलेंस बाल विनय मंदिर, इंदौर	30	15	45
		शासकीय अहिल्याश्रम कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय महाराणा प्रताप नगर, इंदौर	00	35	35
		शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, डकाच्या, इंदौर	25	16	41
		शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, मांगलिया, इंदौर	20	20	40
		शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, सांवेर, इंदौर	00	25	25
		शासकीय (बालक) उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, इंदौर	33	00	33
		शासकीय (बालक)उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, बेटमा	35	00	35

	कुल		**172**	**161**	**333**
2.	अशासकीय विद्यालय	भारत बाल विनय मंदिर, इंदौर	20	19	39
		कैरियर एकेडमी, इंदौर	13	07	20
		एम.जी.एम. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, इंदौर	30	10	40
		ऑक्सफोर्ड एकेडमी, राजाबाग कॉलोनी, इंदौर	15	02	17
		टैगोर विद्यापीठ उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, कैलाशपुरी कॉलोनी, इंदौर	25	25	50
		बेटमा पब्लिक स्कूल बेटमा, इंदौर	23	22	45
		नवआदर्श विद्या निकेतन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, केलोदहाला, इंदौर	15	09	24
		ग्रामीण जीवन ज्योति विद्यालय राऊ, इंदौर	20	12	32
		प्रेसीडेंसी पब्लिक स्कूल, केलोदकांकड़, इंदौर	17	10	27
		के. एल. प्रजापति उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, इंदौर	16	12	28
	कुल		**194**	**128**	**322**
	कुल संख्या (1+2)		**317**	**359**	**776**

तालिका से विदित होता है कि प्रदत्त संकलन हेतु शासकीय विद्यालयों के 333 विद्यार्थियों (छात्र–172, छात्राएँ–161) का चयन किया गया एवं अशासकीय विद्यालय के 322 विद्यार्थियों (छात्र–194, छात्राएँ–128) का चयन किया गया। शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों जिनसे प्रदत्तों का संकलन किया गया उनकी कुल संख्या 655 थी।

शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, विजयनगर, इंदौर के 28, शासकीय कस्तुरबा कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, इंदौर के 25, शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, भागीरथपुरा, इंदौर के 26, शासकीय एक्सेलेंस बाल विनय मंदिर, इंदौर के 45, शासकीय अहिल्याश्रम कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय महाराणा प्रताप नगर, इंदौर के 35, शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, डकाच्या, इंदौर के 41, शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, मांगलिया, इंदौर के 40, शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, सांवेर, इंदौर के 25,

शासकीय (बालक) उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, इंदौर के 33 एवं शासकीय (बालक)उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, बेटमा के 35 विद्यार्थी थे।

अशासकीय भारत बाल विनय मंदिर, इंदौर के 39, कैरियर एकेडमी, इंदौर के 20, एम. जी.एम. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, इंदौर के 40, ऑक्सफोर्ड एकेडमी, राजाबाग कॉलोनी, इंदौर के 17, टैगोर विद्यापीठ उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, कैलाशपुरी कॉलोनी, इंदौर के 50, बेटमा पब्लिक स्कूल बेटमा, इंदौर के 45, नवआदर्श विद्या निकेतन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, केलोदहाला, इंदौर के 24, ग्रामीण जीवन ज्योति विद्यालय राऊ, इंदौर के 32, प्रेसीडेंसी पब्लिक स्कूल, केलोदकांकड़, इंदौर के 27 एवं के. एल. प्रजापति उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, इंदौर के 28 विद्यार्थी थे।

1.11.0 शोध अभिकल्प

प्रस्तुत शोध सह संबंधात्मक सर्वेक्षण प्रकृति का है, जिसके अंतर्गत शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के मूल्यों का अध्ययन व्यक्तित्व, समायोजन, आत्मविश्वास के संदर्भ में किया गया।

1.12.0 उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु शोधार्थी द्वारा प्रदत्तों के संकलन हेतु निम्न उपकरणों का उपयोग किया गया। जिसका विवरण तालिका क्रमांक 1.2 में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका क्रमांक 1.2
उपकरणों का विवरण

क्र.	चर	उपकरण का नाम	निर्माणकर्ता	वर्ष	न्यादर्श	आयु	विश्वसनीयता एवं वैद्यता
1.	मूल्य	स्टडी ऑफ वेल्यू टेस्ट	डॉ. आर. के. ओझा एवं डॉ. एम. भार्गव	1959	2450 विद्यार्थी 1350 बालक 1100 बालिकायें	17–25 वर्ष हेतु	अर्धविच्छेदन विश्वसनीयता का मान (a) सैद्धांतिक मूल्य के लिए 0.78, (b) आर्थिक मूल्य के लिए 0.81, (c) सौंदर्यात्मक मूल्य के लिए 0.76, (x) सामाजिक

							मूल्य के लिए 0. 82, (y) राजनीतिक मूल्य के लिए 0.83, एवं (z) धार्मिक मूल्य के लिए 0. 84
2.	व्यक्तित्व	पर्सनालिटी टेस्ट (अंतर्मुखी–बहिर्मुखी)	डॉ. अशोक शर्मा एवं श्रीमती मीनू अग्रवाल	2002	1200 विद्यार्थी 750 बालक 450 बालिका	13–22 वर्ष हेतु	परीक्षण–पुनः परीक्षण विधि से 0.67 0.72 वैद्यता
3.	समायोजन	एडजेस्टमेंट इन्वेन्टरी फॉर स्कूल स्टूडेन्ट्स	ए. के. पी. सिन्हा एवं आर. पी. सिंग		2280 विद्यार्थी 1550 पुरूष 730 महिला	महाविद्यालयीन विद्यार्थी	अर्धविच्छेदन विधि से 0.94 विश्वसनीयता परीक्षण–पुनः परीक्षण 0.93 (वि.) हॉट्स विधि से 0. 94 के. आर फार्मुला 0.92 सार्थक स्तर का मान = 0.001
4.	आत्मविश्वास	सेल्फकॉन्फिडेन्स इन्वेन्टरी	रेखा गुप्ता	2013	2074 विद्यार्थी 748 पुरूष 1326 महिलायें	किशोर एवं प्रौढ़ हेतु	अर्धविच्छेदन विधि से 0.95 के.आर फार्मुला से 0.94 परीक्षण पुनः परीक्षण विधि से 0.88 सहसंबंध विधि से 0.25

1.13.0 प्रदत्त संकलन की प्रक्रिया

सर्वप्रथम शोधार्थी द्वारा चयनित विद्यालयों से प्रदत्तों का संकलन करने के विषयक जिला शिक्षा अधिकारी से सहमति प्राप्त करने हेतु आवेदन किया गया। अनुमति प्राप्त करने के पश्चात् मध्यप्रदेश बोर्ड के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया। तदुपरांत प्रदत्तों के संकलन हेतु विद्यालयों के प्राचार्यों से अनुमति ली गई। उसके बाद विद्यार्थियों को शोध अध्ययन उद्देश्यों से अवगत करवाया गया। तत्पश्चात्

विद्यार्थियों को उपकरण प्रशासित करने की प्रक्रिया समझायी गई एवं निर्देश दिए गए। प्रथम दिवस उपकरणों का उन्मुखीकरण किया गया। उन्मुखीकरण वाले दिन विद्यार्थियों से तादात्म्य स्थापित किया गया। द्वितीय दिवस मूल्य परीक्षण को विद्यार्थियो ंपर प्रशासित किया गया। तृतीय दिवस पर्सनालिटी टेस्ट विद्यार्थियों पर प्रशासित किया गया। चतुर्थ दिवस एडजेस्टमेण्ट इनवेन्टरी फॉर स्कूल स्टूडेन्ट्स (AISS) विद्यार्थियों पर प्रशासित किया गया। पंचम दिवस सेल्फ कॉन्फिडेन्स इनवेन्टरी विद्यार्थियों पर प्रशासित किया गया। इस प्रकार प्रतिदिन एक घंटे के कालांश में एक उपकरण को विद्यार्थियों पर प्रशासित किया गया। अतः एक विद्यालय में प्रदत्तों के संकलन में पाँच दिन लगे। प्रत्येक दिन अलग–अलग उपकरण से प्रदत्त एकत्रित किए गए । इस प्रकार शोधार्थी द्वारा 20 विद्यालयों से (प्रत्येक विद्यालय 5 दिवस) 100 दिवस में प्रदत्त संकलन किए गए। सभी परीक्षण होने के बाद सभी उपकरण तथा उत्तर पत्रक जमा किए गए। प्रदत्त संकलन करने के पश्चात् सभी चरों से संबंधित प्राप्त उत्तर पत्रकों का अंकन किया गया। विद्यार्थियों द्वारा सभी अनुक्रिया उपकरणों के मेनुअल के आधार पर दी गई। फिर प्रदत्तों का विश्लेषण उपयुक्त सांख्यिकी प्रविधि द्वारा किया गया। शोध कार्य की कार्य योजना तालिका क्रमांक 1.3 में प्रस्तुत की गई है।

तालिका क्रमांक 1.3

प्रदत्त संकलन की कार्ययोजना का विवरण

क्र.	विद्यालयों के नाम	दिवस	क्रिया
1.	शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, विजयनगर, इंदौर	5 दिवस	प्रथम दिवस उपकरणों
2.	गवर्नमेंट कस्तुरबा गर्ल्स उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, सुभाषचौक, इंदौर	5 दिवस	
3.	गवर्नमेंट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, भागीरथपुरा, इंदौर	5 दिवस	
4.	गवर्नमेंट एक्सेलेंस बाल विनय मंदिर, इंदौर	5 दिवस	
5.	गवर्नमेंट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, डकाच्या, इंदौर	5 दिवस	
6.	गवर्नमेंट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, मांगलिया, इंदौर	5 दिवस	
7.	केरियर एकेडमी, इंदौर	5 दिवस	
8.	टैगोर विद्यापीठ उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, कैलाशपुरी कॉलोनी, इंदौर	5 दिवस	

9.	शासकीय अहिल्याश्रम कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय क्रमांक–2, महाराणा प्रताप नगर, इंदौर	5 दिवस	का उन्मुखीकरण, द्वितीय दिवस मूल्य परीक्षण, तृतीय दिवस व्यक्तित्व परीक्षण, चतुर्थ दिवस समायोजन अनुसूची, पंचम दिवस आत्मविश्वास अनुसूची को प्रशासित किया गया।
10.	गवर्नमेंट गर्ल्स उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, सांवेर, इंदौर	5 दिवस	
11.	शासकीय उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, सांवेर जिला, इंदौर	5 दिवस	
12.	एम.जी.एम. उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, इंदौर	5 दिवस	
13.	ऑक्सफोर्ड एकेडमी बड़ा गणपती, राजबाग कॉलानी, इंदौर	5 दिवस	
14.	भारत बाल विनय मंदिर, इंदौर	5 दिवस	
15.	शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, बेटमा, इंदौर	5 दिवस	
16.	बेटमा पब्लिक स्कूल, बेटमा, इंदौर	5 दिवस	
17.	नवआदर्श विद्या निकेतन, केलोदहाला, इंदौर	5 दिवस	
18.	ग्रामीण जीवन ज्योति राऊ, इंदौर	5 दिवस	
19.	प्रेसीडेंसी पब्लिक स्कूल, केलोदकाकड़, इंदौर	5 दिवस	
20.	के. एल. प्रजापति उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, इंदौर	5 दिवस	
	कुल	**100 दिन**	

प्रस्तुत शोध से संबंधित प्रदत्त संकलन की कार्य योजना का विवरण उपरोक्त तालिका में दिया गया है। जिसके अंतर्गत प्रत्येक विद्यालय से प्रदत्तों का संकलन 5 दिवस में किया गया। इसी प्रकार 20 विद्यालयों से प्रदत्तों का संकलन कुल 100 दिवस में पूर्ण किया गया। उसके उपरांत प्रदत्तों का विश्लेषण उपयुक्त सांख्यिकीय तकनीक द्वारा किया गया।

1.14.0 प्रदत्त विश्लेषण

प्रस्तुत शोध में उद्देश्यवार प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु निम्नांकित सांख्यिकी तकनीक का प्रयोग किया गया।

i. शोध अध्ययन का प्रथम उद्देश्य ''शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मूल्यों एवं व्यक्तित्व के मध्य सहसंबंध का अध्ययन पृथक–पृथक करना जबकि आत्मविश्वास एवं समायोजन के प्रभाव को नियंत्रित किया गया हो का अध्ययन करना था'' जिसके प्रदत्तों का विश्लेषण आंशिक सहसंबंध गुणांक द्वारा किया गया।

ii. शोध अध्ययन का द्वितीय उद्देश्य ''शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मूल्यों एवं आत्मविश्वास के मध्य सहसंबंध का अध्ययन पृथक–पृथक करना जबकि व्यक्तित्व एवं समायोजन के प्रभाव को नियंत्रित किया गया हो का अध्ययन करना था'' जिसके प्रदत्तों का विश्लेषण आंशिक सहसंबंध गुणांक द्वारा किया गया।

iii. शोध अध्ययन का तृतीय उद्देश्य ''शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मूल्यों एवं समायोजन के मध्य सहसंबंध का अध्ययन पृथक–पृथक करना जबकि व्यक्तित्व एवं आत्मविश्वास के प्रभाव को नियंत्रित किया गया हो का अध्ययन करना था'' जिसके प्रदत्तों का विश्लेषण आंशिक सहसंबंध गुणांक द्वारा किया गया।

iv. शोध अध्ययन का चतुर्थ उद्देश्य ''शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों के मूल्यों एवं व्यक्तित्व के मध्य सहसंबंध का अध्ययन पृथक–पृथक करना जबकि आत्मविश्वास एवं समायोजन के प्रभाव को नियंत्रित किया गया हो का अध्ययन करना था'' जिसके प्रदत्तों का विश्लेषण आंशिक सहसंबंध गुणांक द्वारा किया गया।

v. शोध अध्ययन का पंचम उद्देश्य ''शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों के मूल्यों एवं आत्मविश्वास के मध्य सहसंबंध का अध्ययन पृथक–पृथक करना जबकि व्यक्तित्व एवं समायोजन के प्रभाव को नियंत्रित किया गया हो का अध्ययन करना था'' जिसके प्रदत्तों का विश्लेषण आंशिक सहसंबंध गुणांक द्वारा किया गया।

vi. शोध अध्ययन का षष्टम उद्देश्य ''शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों के मूल्यों एवं समायोजन के मध्य सहसंबंध का अध्ययन पृथक–पृथक करना जबकि व्यक्तित्व एवं आत्मविश्वास के प्रभाव को नियंत्रित किया गया हो का अध्ययन करना था'' जिसके प्रदत्तों का विश्लेषण आंशिक सहसंबंध गुणांक द्वारा किया गया।

vii. शोध अध्ययन का सप्तम उद्देश्य ''शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्राओं के मूल्यों एवं व्यक्तित्व के मध्य सहसंबंध का अध्ययन पृथक–पृथक करना जबकि आत्मविश्वास एवं समायोजन के प्रभाव को नियंत्रित किया गया हो का

अध्ययन करना था'' जिसके प्रदत्तों का विश्लेषण आंशिक सहसंबंध गुणांक द्वारा किया गया।

viii. शोध अध्ययन का अष्टम उद्देश्य ''शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्राओं के मूल्यों एवं आत्मविश्वास के मध्य सहसंबंध का अध्ययन पृथक–पृथक करना जबकि व्यक्तित्व एवं समायोजन के प्रभाव को नियंत्रित किया गया हो का अध्ययन करना था'' जिसके प्रदत्तों का विश्लेषण आंशिक सहसंबंध गुणांक द्वारा किया गया।

ix. शोध अध्ययन का नवम उद्देश्य ''शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्राओं के मूल्यों एवं समायोजन के मध्य सहसंबंध का अध्ययन पृथक–पृथक करना जबकि व्यक्तित्व एवं आत्मविश्वास के प्रभाव को नियंत्रित किया गया हो का अध्ययन करना था'' जिसके प्रदत्तों का विश्लेषण आंशिक सहसंबंध गुणांक द्वारा किया गया।

x. शोध अध्ययन का दशम उद्देश्य ''शासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मूल्य एवं उनके विभिन्न आयामों की भविष्यवाणी करने में व्यक्तित्व, आत्मविश्वास एवं समायोजन के संयुक्त योगदान का अध्ययन करना था'' जिसके प्रदत्तों का विश्लेषण बहु सहसंबंध तकनीक द्वारा किया गया।

xi. शोध अध्ययन का एकादश उद्देश्य ''अशासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मूल्य एवं उनके विभिन्न आयामों की भविष्यवाणी करने में व्यक्तित्व, आत्मविश्वास एवं समायोजन के संयुक्त योगदान का अध्ययन करना था'' जिसके प्रदत्तों का विश्लेषण बहु सहसंबंध तकनीक द्वारा किया गया।

xii. शोध अध्ययन का द्वादश उद्देश्य ''शासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मूल्य एवं उनके विभिन्न आयामों की पृथक–पृथक भविष्यवाणी करने में व्यक्तित्व, आत्मविश्वास एवं समायोजन के स्वतंत्र योगदान का अध्ययन करना था'' जिसके प्रदत्तों का विश्लेषण प्रतिगमन विश्लेषण तकनीक द्वारा किया गया।

xiii. शोध अध्ययन का त्रियोदश उद्देश्य ''अशासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मूल्य एवं उनके विभिन्न आयामों की पृथक–पृथक भविष्यवाणी करने में

व्यक्तित्व, आत्मविश्वास एवं समायोजन के स्वतंत्र योगदान का अध्ययन करना था'' जिसके प्रदत्तों का विश्लेषण प्रतिगमन विश्लेषण तकनीक द्वारा किया गया।

1.15.0 परिणाम

प्रस्तुत शोध के निम्नलिखित परिणाम थे –

i. शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के मूल्य एवं व्यक्तित्व में मध्यमस्तर तथा अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में निम्नस्तर का सार्थक धनात्मक सहसंबंध पाया गया जबकि उनके आत्मविश्वास एवं समायोजन के प्रभाव को नियंत्रित किया गया था।

ii. शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मूल्य एवं आत्मविश्वास में उच्चस्तर का सार्थक धनात्मक सहसंबंध पाया गया जबकि उनके व्यक्तित्व एवं समायोजन के प्रभाव को नियंत्रित किया गया था।

iii. शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मूल्य एवं समायोजन में निम्नस्तर का सार्थक धनात्मक सहसंबंध पाया गया जबकि उनके व्यक्तित्व एवं आत्मविश्वास के प्रभाव को नियंत्रित किया गया था।

iv. शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के मूल्य एवं व्यक्तित्व में मध्यमस्तर तथा अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के मूल्य एवं व्यक्तित्व में निम्नस्तर का धनात्मक सार्थक सहसंबंध पाया गया जबकि उनके आत्मविश्वास एवं समायोजन के प्रभाव को नियंत्रित किया गया था।

v. शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के मूल्य एवं आत्मविश्वास में निम्नस्तर तथा अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के मूल्य एवं आत्मविश्वास में मध्यमस्तर का धनात्मक सार्थक सहसंबंध पाया गया जबकि उनके व्यक्तित्व एवं समायोजन के प्रभाव को नियंत्रित किया गया था।

vi. शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के मूल्य एवं समायोजन में निम्नस्तर का धनात्मक सार्थक सहसंबंध पाया गया जबकि उनके व्यक्तित्व एवं आत्मविश्वास के प्रभाव को नियंत्रित किया गया था।

vii. शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्राओं के मूल्य एवं व्यक्तित्व में मध्यमस्तर तथा अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्राओं के मूल्य एवं व्यक्तित्व में निम्नस्तर का धनात्मक सार्थक सहसंबंध पाया गया जबकि उनके आत्मविश्वास एवं समायोजन के प्रभाव को नियंत्रित किया गया था।

viii. शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्राओं के मूल्य एवं आत्मविश्वास में निम्न स्तर तथा अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्राओं के मूल्य एवं आत्मविश्वास में मध्यम स्तर का धनात्मक सहसंबंध पाया गया जबकि उनके व्यक्तित्व एवं समायोजन के प्रभाव को नियंत्रित किया गया था।

ix. शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्राओं के मूल्य एवं समायोजन में निम्नस्तर का धनात्मक सार्थक सहसंबंध पाया गया जबकि उनके व्यक्तित्व एवं आत्मविश्वास के प्रभाव को नियंत्रित किया गया था।

x. शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के मूल्यों के भविष्यवाणी करने में व्यक्तित्व, आत्मविश्वास एवं समायोजन का सार्थक रूप से अत्यधिक उच्चस्तरीय संयुक्त सार्थक योगदान है।

- शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के सैद्धांतिक मूल्य की भविष्यवाणी करने में व्यक्तित्व, आत्मविश्वास एवं समायोजन का मध्यमस्तर का सार्थक संयुक्त योगदान है।
- शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के आर्थिक मूल्य की भविष्यवाणी करने में व्यक्तित्व, आत्मविश्वास एवं समायोजन का निम्नस्तर का सार्थक संयुक्त योगदान है।
- शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के सौंदर्यात्मक मूल्य की भविष्यवाणी करने में व्यक्तित्व, आत्मविश्वास एवं समायोजन का अत्यंत निम्नस्तर का सार्थक संयुक्त योगदान है।
- शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्य की भविष्यवाणी करने में व्यक्तित्व, आत्मविश्वास एवं समायोजन का निम्नस्तर का सार्थक संयुक्त योगदान है।

- शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के राजनीतिक मूल्य की भविष्यवाणी करने में व्यक्तित्व, आत्मविश्वास एवं समायोजन का निम्नस्तर का सार्थक संयुक्त योगदान है।
- शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के धार्मिक मूल्य की भविष्यवाणी करने में व्यक्तित्व, आत्मविश्वास एवं समायोजन का निम्नस्तर का धनात्मक सार्थक संयुक्त योगदान है।

xi. अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के मूल्यों की भविष्यवाणी करने में व्यक्तित्व, आत्मविश्वास एवं समायोजन का उच्चस्तरीय सार्थक संयुक्त योगदान है।

- अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के सैद्धांतिक मूल्य की भविष्यवाणी करने में व्यक्तित्व, आत्मविश्वास एवं समायोजन का निम्नस्तरीय सार्थक संयुक्त योगदान है।
- अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के आर्थिक मूल्य की भविष्यवाणी करने में व्यक्तित्व, आत्मविश्वास एवं समायोजन का निम्नस्तरीय सार्थक संयुक्त योगदान है।
- अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के सौंदर्यात्मक मूल्य की भविष्यवाणी करने में व्यक्तित्व, आत्मविश्वास एवं समायोजन का सार्थक संयुक्त योगदान नहीं है।
- अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्य की भविष्यवाणी करने में व्यक्तित्व, आत्मविश्वास एवं समायोजन का सार्थक संयुक्त योगदान है।
- अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के राजनीतिक मूल्य की भविष्यवाणी करने में व्यक्तित्व, आत्मविश्वास एवं समायोजन का सार्थक संयुक्त योगदान नहीं है।
- अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के धार्मिक मूल्य की भविष्यवाणी करने में व्यक्तित्व, आत्मविश्वास एवं समायोजन का सार्थक संयुक्त योगदान नहीं है।

xii. शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के मूल्यों की भविष्यवाणी करने में आत्मविश्वास का उच्चस्तरीय स्वतंत्र योगदान पाया गया जबकि व्यक्तित्व एवं समायोजन का निम्नस्तरीय योगदान पाया गया। अतः यह कहा जा सकता है कि शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के मूल्यों के लिए आत्मविश्वास का सर्वाधिक सार्थक योगदान है उसके बाद व्यक्तित्व एवं समायोजन का सार्थक योगदान है।

- शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के सैद्धांतिक मूल्यों की भविष्यवाणी करने में आत्मविश्वास का उच्चस्तरीय स्वतंत्र योगदान पाया गया जबकि व्यक्तित्व एवं समायोजन का निम्नस्तरीय योगदान पाया गया। अतः यह कहा जा सकता है कि शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के मूल्यों के लिए आत्मविश्वास का सर्वाधिक सार्थक योगदान है उसके बाद व्यक्तित्व एवं समायोजन का सार्थक योगदान है।
- शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के आर्थिक मूल्यों की भविष्यवाणी करने में समायोजन का स्वतंत्र सार्थक योगदान है जबकि व्यक्तित्व एवं आत्मविश्वास का स्वतंत्र सार्थक योगदान नहीं है।
- शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के सौंदर्यात्मक मूल्यों की भविष्यवाणी करने में समायोजन का निम्नस्तरीय सार्थक स्वतंत्र योगदान है जबकि व्यक्तित्व एवं आत्मविश्वास का स्वतंत्र सार्थक योगदान नहीं है।
- शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों की भविष्यवाणी करने में आत्मविश्वास एवं व्यक्तित्व का स्वतंत्र सार्थक योगदान नहीं है।
- शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के राजनीतिक मूल्यों की भविष्यवाणी करने में आत्मविश्वास का निम्नस्तरीय सार्थक योगदान है जबकि व्यक्तित्व एवं समायोजन का सार्थक स्वतंत्र योगदान नहीं है।
- शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के धार्मिक मूल्यों की भविष्यवाणी करने में आत्मविश्वास का सार्थक स्वतंत्र योगदान है जबकि व्यक्तित्व एवं समायोजन का सार्थक स्वतंत्र योगदान नहीं है।

xiii. अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के मूल्यों की भविष्यवाणी करने के लिए आत्मविश्वास का उच्चस्तरीय स्वतंत्र योगदान है जबकि व्यक्तित्व और समायोजन का निम्नस्तरीय योगदान है। अतः यह कहा जा सकता है कि अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के मूल्यों के लिए आत्मविश्वास का सर्वाधिक योगदान है उसके बाद व्यक्तित्व एवं समायोजन का सार्थक योगदान है।

- अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के सैद्धांतिक मूल्य की भविष्यवाणी करने के लिए व्यक्तित्व, आत्मविश्वास एवं समायोजन का सार्थक स्वतंत्र योगदान नहीं है।
- अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के आर्थिक मूल्य की भविष्यवाणी करने के लिए व्यक्तित्व, आत्मविश्वास एवं समायोजन का सार्थक स्वतंत्र योगदान नहीं है।
- अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के सौंदर्यात्मक मूल्य की भविष्यवाणी करने के लिए व्यक्तित्व, आत्मविश्वास एवं समायोजन में सार्थक स्वतंत्र योगदान नहीं है।
- अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्य की भविष्यवाणी करने के लिए व्यक्तित्व, आत्मविश्वास एवं समायोजन में सार्थक स्वतंत्र योगदान नहीं है।
- अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के राजनीतिक मूल्य की भविष्यवाणी करने के लिए व्यक्तित्व, आत्मविश्वास एवं समायोजन में सार्थक स्वतंत्र योगदान नहीं है।
- अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के धार्मिक मूल्य की भविष्यवाणी करने के लिए व्यक्तित्व, आत्मविश्वास एवं समायोजन में सार्थक स्वतंत्र योगदान नहीं है।

1.16.0 शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत शोध कार्य की शैक्षणिक उपयोगिता विद्यार्थियों, शिक्षकों, पाठ्यक्रम निर्माताओं, समाज तथा पाठ्यपुस्तक लेखकों के लिए निम्नलिखित हो सकते हैं –

विद्यार्थियों हेतु

शोध निष्कर्ष के अनुसार विद्यार्थियों के लिए शैक्षिक निहितार्थ निम्नलिखित है –

i. निष्कर्ष में पाया गया कि शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मूल्य एवं व्यक्तित्व, मूल्य एवं आत्मविश्वास, तथा मूल्य एवं समायोजन में धनात्मक सार्थक सहसंबंध है। अतः शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों को अपने आत्मविश्वास, व्यक्तित्व का विकास करने हेतु शैक्षणिक संस्थानों में अयोजित विभिन्न सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों में समय–समय भाग लेना चाहिए तथा उन्हें सामूहिक गतिविधियों में भाग लेना चाहिए जिससे कि वे समूह में समायोजित होने के लिए प्रयास कर सकते हैं। परिश्रम, ईमानदारी, अहिंसा, चरित्र आदि जैसे शीर्षक पर फिल्म प्रदर्शन, निबंध प्रतियोगिता एवं नुक्कड़ नाटकों में भागीदारी लेना चाहिए जिससे कि उनमें विभिन्न प्रकार के मूल्यों का विकास भी संभव हो सकता है। दोनों प्रकार के विद्यालयों के छात्रा एवं छात्राओं को विभिन्न कार्यक्रम जैसे नारी सशक्तिकरण, स्काउट गाइड में सहभागिता लेना चाहिए। निष्कर्ष में यह भी पाया गया कि शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के मूल्यों की भविष्यवाणी करने में उनके व्यक्तित्व, समायोजन एवं आत्मविश्वास का संयुक्त और उच्च सार्थक योगदान होता है। विद्यार्थियों विभिन्न प्रकार के मूल्यों के विकास हेतु व्यक्तित्व समायोजन एवं आत्मविश्वास के संबंधों को बनाए रखने के गोष्ठी, कार्यशाला एवं सेमिनारों में सहभागिता लेना चाहिए। जिससे उनके व्यक्तित्व, आत्मविश्वास एवं समायोजन तीनों के संयुक्त रूप से योगदान से उनके का मूल्य प्रबल हो सकते हैं।

शिक्षकों हेतु

उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के शिक्षकों द्वारा पारंपरिक कार्यक्रमों एवं गतिविधियों के साथ–साथ आधुनिक शिक्षा प्रणाली जिसमें विद्यार्थी केन्द्रित शिक्षा को ध्यान में रखकर गतिविधि करवाई जानी चाहिए। शिक्षकों द्वारा व्यक्तिगत विभिन्नताओं का ध्यान में रखते हुए गृहकार्य, परियोजना कार्य एवं सामाजिक संस्थाओं से अंतर्क्रिया आदि गतिविधियों का आयोजन सफलतापूर्वक किया जाना चाहिए, जिससे विद्यार्थियों के मूल्यों का विकास हो सके तथा सही निर्णय ले सके। शिक्षकों द्वारा मूल्य विकास हेतु नवीन एवं आधुनिक शिक्षण

विधियों का उपयोग करना चाहिए। शैक्षणिक संस्थानों में शिक्षकों को विद्यार्थियों में विभिन्न प्रकार के मूल्यों की प्रबलता के लिए विभिन्न सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का आयोजन करना चाहिए तथा समायोजन के विकास के लिए सामूहिक गतिविधियों का आयोजन करना चाहिए जिससे विद्यार्थियों में परिश्रम, ईमानदारी, अहिंसा, चरित्र आदि मूल्यों का विकास संभव हो सके।

पाठ्यचर्या निर्माताओं हेतु

शोध निष्कर्ष के अनुसार पाठ्यक्रम निर्माताओं के लिए शैक्षिक निहितार्थ निम्नलिखित है –

पाठ्यचर्या निर्माण करने वाले शिक्षाशास्त्रियों को पाठ्यचर्या में विभिन्न सामाजिक सेवा से संबंधित गतिविधियाँ जैसे गाँव के लोगों को साक्षर एवं शिक्षित करना निम्न वर्ग के परिवारों को विद्युत बल्बों का वितरण, स्वच्छता कार्यक्रम आदि का उल्लेख किया जाना चाहिए। महापुरूषों की जयंती दिवस पर कार्यक्रमों को आयोजित करने हेतु योजना बनाना चाहिए ताकि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का विकास इस हो सके कि उनमें समस्त प्रकार के मूल्यों का विकास संभव हो सके।

अभिभावकों हेतु

बालक एवं बालिकाओं में मूल्य के विकास हेतु सर्वप्रथम अभिभावक ही एक रोल मॉडल बनना चाहिए। उन्हें इस प्रकार का वातावरण प्रदान करना चाहिए जिससे कि बालक एवं बालिकाएँ पर्यावरण के साथ समायोजित हो सकें एवं आत्म विश्वासी हो सकें जब इस प्रकार के गुणों का उनमें विकास होगा तो विभिन्न प्रकार के मूल्यों का विकास उनमें स्वतः ही हो जायेगा जिसके लिए अभिभावकों अलग से प्रयास नहीं करने हो सकते हैं।

1.17.0 भविष्य में शोध हेतु सुझाव

1. विभिन्न व्यवसायिक पाठ्यक्रम जैसे इंजीनियरिंग, प्रबंधन, चिकित्सा एवं न्याय के विद्यार्थियों पर भी शोध कार्य किया जा सकता है।
2. मूल्य आधारित गतिविधियों को सफलतापूर्वक लागू करने वाले विद्यालयों की केस स्टडी की जा सकती है।
3. गुणात्मक शोध कार्य भी किया जा सकता है।
4. मूल्य का अन्य चरों के साथ संबंधों का भी अध्ययन किया जा सकता है।

5. उच्चतर माध्यमिक स्तर के विभिन्न संकाय के विद्यार्थियों के मूल्य पैटर्न का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
6. वर्तमान शोध मध्यप्रदेश शिक्षा मंडल से संबंधित शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों पर ही किया गया। इस कार्य को अन्य बोर्ड (जैसे केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मंडल एवं आई. सी. एस. ई. आदि) के संदर्भ में किया जा सकता है।
7. प्रस्तुत शोध कार्य सर्वेक्षण आधारित है। इसे विद्यार्थियों में मूल्य के विकास के संदर्भ में प्रयोगात्मक रूप से भी किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

अग्रवाल, जे. सी. (2016). *उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा.* आगराः अग्रवाल पब्लिकेशन.

इन्दौरिया, जी. (2014). *शेखावाटी क्षेत्र की कस्तुरबा गाँधी आवासीय विद्यालयों की बालिकाओं के आत्मविश्वास, समायोजन एवं मानवीय मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन* (अप्रकाशित पी–एच.डी. (शिक्षा) शोध प्रबंध). श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल टिबड़ेवाला विश्वविद्यालय।

जैन, ए. (2018). *इंदौर शहर के माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्य एवं व्यक्तिगत मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन* (एम. एड. अप्रकाशित लघुशोध). देवी अहिल्या विश्वविद्यालय।

त्यागी, जी.डी. तथा कुमार, वी. (2005). उदीयमान भारत में शिक्षा. आगराः विनोद पुस्तक मंदिर.

तिवारी, आर. (2016). मूल्य शिक्षा. आगराः राखी प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड.

पाल, एच.आर. (2006). प्रगत शिक्षा मनोविज्ञान. दिल्लीः हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निर्देशालय.

पाण्डे, गो. मूल्यमीमांसा. हिन्दी ग्रंथ अकादामी.

पाण्डेय तथा मिश्र, (2004–05). मूल्य शिक्षण. आगराः विनोद पुस्तक मंदिर.

पण्डेय, आर. एस. (2008). शिक्षा मनोविज्ञान. मेरठः आर. लाल. बुक डिपो.

बघेल, ए. (2006). *कक्षा 9वीं के विद्यार्थियों में मूल्य विश्लेषण प्रतिमान की प्रभाविता का मूल्य स्पष्टीकरण, तार्किक योग्यता तथा प्रतिक्रिया के संदर्भ में अध्ययन* (एम.एड. लघुशोध, शिक्षा संस्थान उत्कृष्टता केन्द्र). डी.ए.वि.वि.।

बिहारीलाल, आर. एवं पलोड़, एस. (2017–18). शिक्षा के मनोविज्ञानिक परिप्रेक्ष्य. मेरठः आर. लाल. बुक डिपो.

भटनागर, एस. एवं निगम, एस. (2016). अधिगम और शिक्षण प्रक्रिया. मेरठः आर. लाल. बुक डिपो.

मदान, पी. तथा गर्ग, एस. (2016–17). भारत में शिक्षाः स्थिति, समस्याऐं एवं मुद्दे. आगराः अग्रवाल पब्लिकेशन.

महाबिया, एम. (2005). *इंदौर शहर के विभिन्न विद्यालयों में चलाए जा रहे स्काउट/गाइड कार्यक्रम में भाग लेने वाले विद्यार्थियों में जोखिम क्षमता तथा नैतिक मूल्यों के विकास का अध्ययन* (एम.एड. लघुशोध, शिक्षा संस्थान उत्कृष्टता केन्द्र). डी.ए.वि.वि.।

मंगल, एस. के. (2008). शिक्षा मनोविज्ञान. नई दिल्लीः प्रेन्टीस हॉल ऑफ इंडिया.

रामशक्ल, पी., मिश्र एवं करूणाकर (2004–05). मूल्यशिक्षण. आगराः विनोद पुस्तक मंदिर द्वितीय संस्करण.

शर्मा, आर.ए. (2016). मानव मूल्य एवं शिक्षा. मेरठः आर. लाल. बुक डिपो.

शर्मा,बी.एल. माहेश्वरी, बी. के. (2001). पर्यावरण और मानव मूल्यों के लिए शिक्षा. आर. लाल. बुक डिपो.

सक्सेना तथा स्वरूप, (2008). शिक्षा के दर्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत. आर. लाल. बुक डिपो.

सिंह, एम. (2011). *बी.एड. शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभियोग्यता, व्यावसायिक, रूचि एवं शिक्षक मूल्यों का लिंग व संकाय के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन* (अप्रकाशित एम.एड. (शिक्षा) लघुशोध प्रबंध). देवी अहिल्या विश्वविद्यालय।

सुनीता, जी. (2017). *शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर व्यक्तिगत मूल्य, सामाजिक आर्थिक स्थिति के प्रभाव का अध्ययन* (एम.एड. लघुशोध, शिक्षा संस्था उत्कृष्टता केन्द्र). देवी अहिल्या विश्वविद्यालय।

संगीत, सिंह (2009). *पूर्वी उत्तरप्रदेश में इण्टरमीडिएट एवं स्नातक स्तर के विद्यार्थियों का नैतिक ह्रास के प्रति मत एवं उन्हें दूर करने में नैतिक शिक्षा तथा युवकों की भूमिका* (पी–एच.डी. प्रकाशित). महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ।

Archana, M. (2016). *A study of values of secondary school students in relation to their socio-economic status and modernization. Learning community*. 7(3), 203-216. http://nd publisher.in/admin/issues/LCV7N3a.pdf

Charles A. & Parikh, J. (2017). *Influence of Gender on the personal values of higher secondary students.* Vol4(3), DOI : 10.25215/0403.312

Dwevedi, A. K. (2005). *Impact of modernization on values of primary school teachers in relation to their sex locale and type of school* [Ph. D. thesis, VBS Purvanchal University]. Shodhganga http://hdl.handle.net/10603/168113

Ghorai, Khan & Mohakud (2021). Influence of family backgrounds or Moral Values in higher secondary students. International journal of management & focial science Research review 2015, vol-4, DOI-10.36349/easjehl.2021.vo4i02.002

Goel, A. Goel, S. L. Human Values: Principles and Practice New Delhi: Deep and Deep Publications Pvt. Ltd. 2008.

Kaur, L. (2016). Moral Value among school going students in relation to their gender, International journal of Physiology, nutrition & Physical Education. Vol-1,issue-1 89-91.

Khan,S. Ghorai, N. & Samanta, T. (2021). Level of education as an influential factors of Moral Value among students of west Bangal. Arian journal of education & social studies 14(3) DOI: 10.9734/AJESS/2021/V14i330358 pg.47-53

Khan, K. (2019). *A study of parental attitudes towards professional education of girls in relation to their values and socio economic status* [Ph.D. Thesis, Aligarh Muslim University]. Shodhganga http://hdl.handle.net/10603/254794

Nisha, N. (1990). *A study of adolescent alienation in relation to Personality, Values, Adjustment, Self Esteem, Locus of Control and Academic Achievement* [Ph.D. Thesis, Punjab University]. Shodhganga http://hdl.handle.net./10603/83309

Patel, M. K. (2018). *A study of value pattern of B.ed. students in relation to certain variables* [Ph.D. Thesis, Sardar Patel University]. Shodhganga http://hdl.handle.net/10603/241636

Rajitha, M. L. (2007). *Values of secondary school students in relation to their personality traits* [Ph.D. Thesis, Manonmaniam University]. Shodhganga http://hdl.handle.net/10603/65715

Ramani, D. J. (2018). *Indian three dimensions Personality, Moral Value and Caste Prejudice among people of different category* [Ph.D. Thesis, Saurashtra University]. Shodhganga http://hdl.handle.net./10603/218154

Rana, S.S. (2014). Study of Moral Values of Elimentary School Students in relation to home environment, Indian journal of applied research vol.4/issue7/july2014/ISSn-2249-555, T.R. College of Education, Sonipat 131001, Haryana, pg. 155-156.

Rogers, V. (2019). *Comparative Study of Personality Traits and values of secondary school students studying in Missionary and Non-Missionary Schools* [Ph.D. Thesis, Integral University]. Shodhganga http://hdl.handle.net/10603/272503

Sarmah, C. (2012). *Personality Patterns, Value Preferences and Academic Achievement of the secondary school students among deoris in Assam* [Ph.D. Thesis, Assam University]. Shodhganga http://hdl.handle.net/10603/40825

Sangrila, B. (2020). A study of Moral Values among high school students. An International open access peer reviewed, referred journal, Dept. of Edu., Gawhuati University, www.ijcrt.org/vol.8, issue – 5may2022, ISSN: 2320-28820

Selvajoy, S. R. (2016). *Influence of environmental values and ecofriendly practices on personality development of higher secondary student* [Ph.D. Thesis, Manonmaniam Sundaranar University]. Shodhganga http://hdl.handle.net/10603/203180

Shagufta, H. (1989). " Study of the relationship between personality pattern and values [Ph.D. Thesis, chhatrapati Sahuji Maharaj university, Kanpur]. Shodhganga http://hdl.handle.net/10603/295250 Retrived from 29/01/23

Shahidul, S. M., Zehadul, K. & Suffium, S. M. A. (2016). *Personal values profile of secondary school students. A comparative study on social class background.* vol-1,

Shambhi, P. (1988). *A study of the value patterns and some personality variables of the students studying in three institutions – Shri Satya Sai higher secondary school missionary school, Missionary school and Central school in Andhra Pradesh* [Ph.D. Thesis, Himachal Pradesh University]. Shodhganga http://hdl.handle.net/10603/123131

Singh, R. R. (2007). *A study of human values as enshinned in Indian Constitution among secondary students in relation to their demographic and educational variable* [Ph.D. Thesis, VBS Purvanchal University]. Shodhganga http://hdl.handle.net/10603/167389

Veenam (2017). *A study of values among school teachers at secondary level in relation to their Gender, Local and Mental status* [Ph.D. Thesis, Mewar University]. Shodhganga http://hdl.handle.net./10603/173873

Yadav, S. & Shukla, A. K. (2017). *A comparative study of moral values among the children belonging to nuclear and joint families of lucknow district*. vr/4/1, 118-124. www.echetana.com

Buch, M. B. (1983-88). 4th survey of education research. NCERT.

Buch, M. B. (1988-92). 5th survey of education research. NCERT.

Buch, M.B. (1993-2000). Sixth survey of Educational Research. vol II NCERT, New Delhi 2007

Bhist, P., Sharma, S. & Pande, L. (2015). *Assessment of moral values among children of joint and nuclear families – A comparative study*. vol.1, issue 15, 289.

Dasari, R. P. (2017). *Value system and value Preferences of Prospective teachers of secondary school : An Indian survey.* V5, 1403-1409.

Jose, C. C. (2012). *A study of work values of secondary school teacers in relation to organizational culture.* 75-92. http://ncert.nic.in/pdf/publication/journals and periodicals/journal of india education

Hawani, A. & Chikha, A. B. (2021). *The relationship between value conflict and academic adjustment among students at the higher institute of sport and physical education (KSAR SAID)*. volume-6, 243. www.oapub.org/soc

Ruhela, S. P. (1986). *Human values and education*. sterling Publisher.

shodhganga. Inflibnet.ac.in

urlhttp.handle.net/10603/96936